08/01/2025

[This question paper contains 4 printed pages]

LIBRARY

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2075** **I**

Unique Paper Code : 2052101101

Name of the Paper : Aadikal evam Nirgunbhakti Kavya
हिंदी कविता : आदिकाल एवं निर्गुण-भक्ति काव्य

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(ii) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए । 9×3=27

(क) भयौ एक फुरमान। बान जोगिनिपुर संध्यौ।।
सुइ सबद अरु बान। अग्र अबिचल कर बंध्यौ।।
बयौ बियौ फुरमान। तानि रष्यौ श्रवनंतरि।।
तियौ भयौ अनभयौ। हरयौ पीतसाहि धरंतरि।।

P.T.O.

लै दसन रसन तालु असघन। सीस फट्टिट दह दिसि गबन।।
सुरतान परयौ षां पुक्करै। भयौ चंद राजन मरन।।

अथवा

बदन चाँद तोर नयन चकोर मोर
रूप अमिय-रस पीवे।
अधर मधुर फुल पिया मधुकर तुल
बिनु मधु कत खन जीवे।।
मानिन मन तोर गढ़ल पसाने।
कके न रमसे हसि किछु न उतरि देसि
सुखे जाओ निसि अवसाने।।

(ख) सतगुर साँचा सूरिवाँ, सबद जू बाह्या एक।
लागत ही में मिलि गया, पढ़या कलेजै छेक।।
सतगुर मारया बाण भरि, धरि करि सूधी मूठि।
अंगि उघाड़े लागिया, गई दवा सूँ फूंटि।।

अथवा

बिरहा बिरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिह घटि बिरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।
अंषड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़या, राम पुकारि पुकारि।।

(ग) खेलत मानसरोवर गई। जाइ पाल पर ठाढ़ी भई।।
देखि सरोवर हंसे कुलेली। पद्मावतीसौं कहहिं सहेली।।
ए रानी! मन देखु बिचारी। एहि नैहर रहना दिन चारि।।

जो लगि अहै पिता कर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू।।
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम, कित यह सरवर पाली।।
कित आवन पुनि अपने हाथा। कित मिलि कै खेलब एक साथा।।
सासु ननद बोलिन्ह जिउ लेही। दारून ससुर न निसरै देहीं।।
पिउ पियार सिर ऊपर, पुनि सो करै दहुँ काह।
दहुँ सुख राखै की दुख, देहुँ कस जनम निबाह।।

अथवा

धरी तीर सब कंचुकि सारी, सरवर महँ पैठीं सब बारी।
पाइ नीर जानौं सब बेली। हुलसहिं करहिं काम कै केली।।
करिल केस विसहर बिस-भरे। लहरैं लेहिं कवँल मुख धरे।।
नवल बसंत सँवारी करी। होइ प्रकट जानहु रस भरी।।
उठी कोप जस दारिवँ दाखा। भइ उनँत प्रेम कै साखा।।
सरिवर नहिं समाइ संसारा। चाँद नहाइ पैठ लेइ तारा।।
धनि सो नीर ससि तरई उई। अब कित दीठ कमल औ कूई।।
चकई बिछुरि पुकारै, कहाँ मिलौ, हो नाँह।
एक चाँद निसि सरग महँ, दिन दूसर जल माँह।।

2. बानबेध समय का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। 14

अथवा

बानबेध समय के काव्य-सौन्दर्य की समीक्षा कीजिए।

3. गीतिकाव्य परंपरा में विद्यापति का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

विद्यापति के काव्य के भाव-वैविध्य का परिचय दीजिए।

4. कबीर का काव्य 'आँखिन देखी पर आधारित है कागद लेखी पर नहीं', इस कथन के आलोक में कबीर के काव्य की समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

कबीर की दार्शनिकता को विवेचित कीजिए।

5. सूफी काव्य परंपरा में जायसी का स्थान निर्धारित कीजिए। 14

अथवा

मानसरोदक खंड की अलौकिकता पर प्रकाश डालिए।

6. किसी **एक** विषय पर टिप्पणी लिखिए। 7

(क) विद्यापति की श्रृंगार भावना।

(ख) जायसी का काव्य सौन्दर्य।

(ग) कबीर की भक्ति भावना।

***

10/01/25

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2104** **I**

Unique Paper Code : 2052101102

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Adikal Evam Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी-साहित्येतिहास - लेखन की परम्परा का मूल्यांकन कीजिए। 15

अथवा

आदिकाल के नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए।

2. आदिकाल की सामाजिक - सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए। 15

P.T.O.

अथवा

रासो काव्य की प्रवृत्तियों का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. निर्गुण काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

सगुण काव्यधारा की प्रमुख विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

4. रीतिकाव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

रीतिकालीन वीर काव्य, भक्ति काव्य और नीति काव्य का परिचय दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(10+10+10=30)

(1) नाथ साहित्य

(2) जैन साहित्य

(3) रामभक्ति काव्यधारा

(4) प्रेममार्गी सूफी काव्यधारा

(5) कृष्ण भक्तिकाव्य

***

14/01/25

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **2128** **I**

Unique Paper Code : 2052101103

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A (Hons) Hindi**

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्ही **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिये।

10+10=20

(क) "कल, देखते नहीं – यह रेशम से कढ़ा हुआ शालू।" लड़की भाग गई लड़के ने घर की राह ली। रास्ते में एक लड़के को मोरी में ढकेल दिया, एक छाबड़ी वाले की दिन-भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभी वाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी वैष्णवी से टकराकर अंधे की उपाधि पाई तब कहीं घर पहुँचा।

(ख) अब घर का फालतू सामान अलमारी के पीछे और पलंगों के नीचे छिपाया जाने लगा था। तभी शामनाथ के सामने सहसा एक अड़चन खड़ी हो गई, माँ का क्या होगा ? इस बात की ओर न उनका और न उनकी कुशल ग्रहणी का ध्यान गया था। मिस्टर शामनाथ श्रीमती की ओर घूम कर अंग्रेजी में बोले - माँ का क्या होगा ?

(ग) और अचानक ही उन्होंने निर्णय ले लिया कि अब घर कि किसी बात में दखल न देंगे। यदि गृहस्वामी के लिए पूरे घर में एक चारपाई कि जगह यहीं है तो यहीं पड़े रहेंगे। अगर कहीं और डाल दी गई, तो वहाँ चले जाएँगे। यदि बच्चों के जीवन में उनके लिए कहीं स्थान नहीं तो अपने ही घर में परदेशी की तरह पड़े रहेंगे।

(घ) देखिये, छोटी-मोटी घटनाओं को इतना तूल मत दें। दलित उत्पीड़न जैसा मेरे कॉलेज में कुछ भी नहीं है। और मैं इन वाहियात चीजों को नहीं मानता। हमारे घर में तो भंगिन को भी 'अम्मा' कहा जाता था, ''डीन जैसे अपने आप से बाहर ही नहीं निकल रहे थे।

2. 'पंच परमेश्वर' कहानी की मूल संवेदना लिखिए।

17

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'वारिस' कहानी का विश्लेषण कीजिये।

3. 'चीफ की दावत' कहानी 'सांस्कृतिक मूल्यों के विघटन' की कहानी है कथन से सम्बन्धित अपने विचार लिखिए। 17

अथवा

'दोपहर का भोजन' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'उसने कहा था' कहानी के शीर्षक से आप कहाँ तक सहमत हैं। स्पष्ट कीजिये। 16

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी हाशिये पर जी रहे दलित समाज की बेचैनियों और छटपटाहटों की कहानी हैं। इस कथन की समीक्षा कीजिये।

5. निम्नलिखित मे से किन्ही **दो** पर टिप्पणी लिखिए। (10+10)

(क) 'तीसरी कसम' कहानी का शिल्प।

(ख) 'वापसी' कहानी का मूल भाव।

(ग) 'घुसपैठिये' कहानी के शीर्षक की सार्थकता।

(घ) लहनासिंह का चरित्र।

***